साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

भारतीय सामाजिक मूल्य : एक समाजषास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 दीपमाला मिश्रा
असि0 प्रो0–समाज ाास्त्र
सर्वे वरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
धनुहाँ, चाका, नैनी, इलाहाबाद
E-mail: deepmalamishra28@gmail.com

''मनुश्य को मूल्य अपने जीवन से अपने पर्यावरण से, अपने आप (स्वयं) से, समाज और संस्कृति से ही नहीं, अपितु मानव–अस्तित्व व अनुभव से भी प्राप्त होते है।(1) **डॉ0 राधाकमल मुकर्जी (‘Social Structure of Values’)**

सामाजिक मूल्य समाज की धरोहर ही नहीं, बल्कि एक ऐसा सुदृढ़ आधार है जिस पर सम्पूर्ण समाज के विकास व उन्नति की नींव टिकी होती है। मानव जीवन का आधार जीवन मूल्य ही है। पाप–पुण्य, उचित–अनुचित, ाुभ–अ ाुभ की अवधारणा, जीवन मूल्यों पर आधारित है। मानव समाज में जीवन मूल्य सामाजिक सांस्कृतिक धरातल पर ही जीवित रहते है। समाजभाास्त्रीय अर्थ में, मूल्य या सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मान,लक्ष्य या आद र्ा हैं जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा नियमों का मूल्यांकन किया जाता है। ये मूल्य हमारे लिए कुछ अर्थ रखते हैं ये मूल्य हमारे सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। इन मूल्यों की एक सामाजिक सांस्कृतिक पृश्ठभूमि होती है इसलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में भिन्नता देखने को मिलती है। उदाहरणस्वरूप –भारतीय समाज के हिन्दुओं में विवाह के प्रति एक वि ाश्ट सामाजिक मूल्य यह है कि विवाह–बन्धन एक पवित्र व धार्मिक बन्धन है, इस कारण इसे अपनी इच्छानुसार तोड़ा नहीं जा सकता । साथ ही, यह पवित्रता तभी बनी रह सकती है जबकि पति–पत्नी एक दूसरे के प्रति वफादार रहें जिसका प्रभाव यह है कि विवाह विच्छेद की भावना पनप नही पाती है और विधवा–विवाह को उचित नहीं माना जाता है।

(1) मुकर्जी, राधाकमल–सो ाल स्ट्रॅक्चर ऑफ वैल्यूज, उद्धृत , भारतीय समाज के पथप्रद र्ाक–एम0 एल0 गुप्ता एवं डी0डी0 भार्मा पृ09, 2013

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

इसके विपरीत अमेरिकन समाज में विवाह से सम्बन्धित मूल्यों का नितान्त अभाव होने के कारण विवाह–विच्छेद या विधवा–विवाह निन्दनीय नहीं है। मूल्य सामाजिक जीवन के अन्तः सम्बन्धों को परिभाशित करने में सहायक होते है। मुकर्जी के मतानुसार, व्यक्ति मूल्यों का सृजन भी करता है और उन्हें पूर्ण भी करता है (Man is a Value-creating and value fulfilling animal)(2)

मूल्य दे ा और काल सापेक्ष है, अतः समय के साथ उनमें परिवर्तन होते रहते है। समाज में कभी–कभी मूल्यहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है। बदलते हुए परिवे ा में सामाजिक मूल्य का महत्व नश्ट होना, मूल्यों में भ्रम उत्पन्न हो जाना तथा मूल्यों में परस्पर टकराव होना मूल्यहीनता के प्रमुख कारण है। भारतीय समाज भी इसका अपवाद नहीं है। मूल्य न तो नि ि चत होते हैं और न उनका कोई महत्व होता है। व्यक्ति की दृश्टि किसी भी वस्तु को मूल्यवान बना देती है, किन्तु कुछ चारित्रिक एवं बौद्विक मूल्य स्थायी होते है जिनका सामाजिक–राजनीतिक

जीवन में अत्यधिक महत्व होता है। सत्य– पालन, कर्तव्य,–पालन, संयम, ईमानदारी जैसे मूल्यों के नश्ट होने का अर्थ है– समाज का नश्ट होना। सामाजिक मूल्यों को परिभाशित करते हुए **राधाकमल मुकर्जी** लिखते हैं, ''मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं तथा लक्ष्य (Desires and goals) हैं जिनका आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो प्राकृतिक अधिमान्यताएं मानक तथा अभिलाशाएं बन जाते है।''(3)

हारालाम्बोस के अनुसार, '' एक मूल्य एक वि वास है जो यह बताता है कि क्या अच्छा और वांछनीय है। यह परिभाशित करता है कि क्या महत्वपूर्ण है , लाभप्रद है और प्राप्त करने योग्य है।''सामाजिक मूल्यों को परिभाशित करते हुए श्री **जानॅसन** के मतानुसार,''मूल्यों को एक मानक के रूप में परिभाशित किया जा सकता है जो कि सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिसके द्वारा वस्तुओं की एक साथ तुलना की जाती है और वे एक–दूसरे के सन्दर्भ में स्वीकार या अस्वीकार की जाती हैं, वांछित या अवांछित, अच्छी या बुरी, अधिक या कम उचित मानी जाती है।''(4)

(2) वही।

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

(3) डॉ0 आर0के0 मुकर्जी इन बी0 सिंह के फन्टियर्स ऑफ सो ाल साइंसेंज, पृ0–23 उद्धृत वही पृ0–7

(4) एच0एम0 जॉनसन, समाज ाास्त्र– ए सिस्टमेटिक इन्ट्रोडक ान एलाइड पब्लिके ान लि0, बाम्बे 1966, पृ0–49 उद्धृत मुकर्जी एवं अग्रवाल, समाज ाास्त्र, पृ0–164, 2013।

उपरोक्त कथनानुसार स्पश्ट होता है कि सामाजिक मूल्य वे मानक या धारणाएं है जिनके आधार पर हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, वस्तु के गुण, लक्षण, साधन एवं भावनाओं आदि को उचित या अनुचित, अच्छा या बुरा ठहराते हैं। सामाजिक मूल्यों का जन्म सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु मानव सहयोग के कारण होता है। **मुकर्जी ने मानव को मूल्यों की खोज करने वाला एवं मूल्यों का निर्माण करने वाला 'प्राणी' कहा हैं।** [(5)] (Man is the value seeking and value creating being)।

प्रो0मुकर्जी लिखते हैं,'' किसी समाज को जीवित रहने के लिए नियमित रूप से व्यक्तित्व के सर्वोच्च मूल्यों की पूर्णता का प्रयत्न करना चाहिए।[(6)]

भारतीय सामाजिक मूल्यों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया जाता है। पेरी (Perry)ने मूल्यों को नकरात्मक, सकरात्मक, विकासवादी एवं वास्तविक। कुछ विद्वानों ने सुखवादी, सौन्दर्यवादी, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, तार्किक आदि भागों में बांटते हैं।

प्रो0स्प्रेंगर (Spranger) के द्वारा–(1) सैद्धान्तिक या बौद्विक मूल्य (2) आर्थिक या व्यावहारिक मूल्य (3) सौन्दयत्मिक मूल्य (4) सामाजिक या परार्थवादी मूल्य (5) राजनीतिक या सन्ता सम्बन्धी मूल्य (6) धार्मिक या रहस्यात्मक मूल्य। डॉ0 मुकर्जी ने साध्य मूल्य व साधन मूल्य बताये हैं। **साध्यमूल्य** वे लक्ष्य तथा सन्तुश्टियां हैं जिन्हें मानव तथा समाज जीवन तथा मस्तिश्क के विकास के लिए अपनाता हैं जो व्यक्ति के व्यवहार के अंग होते हैं। 'सत्यं ि ावं सुन्दरम्'– साध्य मूल्य का उदाहरण है।

साधन मूल्य वे हैं जिन्हें व्यक्ति और समाज साध्य मूल्यों को प्राप्त करने के लिए, उनकी सेवा एवं उन्हें उन्नत करने के साधन के रूप में अपनाते हैं। स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सुरक्षा, सत्ता, प्रस्थिति, पें ाा आदि साधन मूल्य है। **सी0एम0केस** ने चार भाग बताएं हैं –(1) सावयवी मूल्य (2) वि ि ाश्ट मूल्य (3) सामाजिक मूल्य (व्यवहार, परम्पराओं, आदतों) (4) सांस्कृतिक मूल्य (उपकरणों, प्रतीकों, सत्य सुन्दरता, उपयोगिता)

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

कोई समाज यदि अपने अस्तित्व को बनायें रखना चाहता है तो उसे अपने मूल्यों का पालन व सरंक्षण आव यक है। तभी स्वर्णिम भारत का पुनर्निर्माण दिखलायी देगा। सामूहिक मूल्य समाज में एकता, संगठन एवं नियन्त्रण बनाये रखते हैं। मूल्यों के अभाव में समाज आदिकालीन बर्बर स्तर पर पहुंच जायेगा। उच्च और उत्तम स्तर के मूल्य ही सभ्य और सुसंस्कृत समाज की पहचान है। मूल्यों के अभाव में व्यक्ति का जीवन घिनौना, प ुवत एवं

(5) वही पृ0–9
(6) वही पृ0–11

संक्षिप्त (Nasty, Brutish and short) हो जायेगा। समाज में मूल्यों के साथ–साथ अपमूल्य भी पाये जाते है जैसा कि आज वै वीकरण के दौर से समाज गुजर रहा है जिसका असर हमारे सामाजिक मूल्यों पर भी देखने को मिलता है आज मूल्यों पर संकट या उसका नैतिक पतन हो रहा है। जन सामाजिक जीवन में बुराइयां उत्पन्न होती है तब अपमूल्यों की स्थापना होने लगती है। अपराध, भाोशण भ्रश्टाचार, हिंसा, द्वेश, विघटन आदि अपमूल्य ही है। जब हम समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यों को महत्व नहीं देते हैं वहीं हमारे मूल्यों का पतन होता है। उदाहरण के लिए, आज एक विधायक या सांसद बिना किसी नैतिक सिद्धान्त या मूल्य की परवाह किये केवल सत्ता के लालच से अपने दल को छोड़कर दूसरे 'दल' में जा मिलता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य का कुछ भी ध्यान न रखते हुए आज भारतीय व्यापार आटे में खड़िया मिट्टी मिला देने में या डिटरजेन्ट का दूध बेचने में कुछ संकोच नहीं करता। इसी प्रकार सरकारी कर्मचारी/नेता/मंत्री जनता का करोड़ों रू0 घोटालों में, मूर्तियों व पार्को के पत्थर खरीदने में आदि में डकार जाते है। दवा फरो ा नकली दवाओं को बेचकर कितने ही अमूल्य जीवनों के साथ खिलवाड़ करने में सकुचाते नहीं है। यह पतन भाहर में ही नही भारतीय गाँवों में भी बहुत तेजी से फैल रहा है।

पहले अधिकां ा समाजों में सामाजिक व्यवहार प्रतिमान के परम्परागत रूप का संचालन धर्म, नैतिकता व ि ाश्टाचार द्वारा होता था। यही कारण था कि समाज में एकरूपता पायी जाती थी किन्तु आजकल इसी का अभाव हो रहा है। वर्तमान समय में भौतिकवादी दृश्टिकोण तथा द ान की प्रधानता के कारण मूल्यों, नैतिकता तथा ि ाश्टाचार में तीव्र गति से गिरावट देखने को मिल रही है। अब व्यक्ति उन्हीं व्यवहारों को अपनाते हैं जो भौतिक समृद्धता में सहायक हों, चाहे उनका सम्बन्ध समाज के मूल्यों के विरूद्व हो। भारत में पहले भी प्रज्ञावादी

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

द ान की प्रधानता रही है जिसका आधार नैतिकता रहा हैं। जबकि भौतिकतावादी द ान में नैतिकता की कमी है।

भारतीय सामाजिक मूल्यों के पतन से सुचारू रूप से चलने वाले रीतिरिवाजों, प्रथा परम्पराओं, नियमों–उपनियमों, भ्रान्ति एवं व्यवस्था आदि के पालन एवं संचालन में बाधा उत्पन्न हो रही है। जिससे समाज विघटित हो रहा है। भारतीय समाज में अनेक समस्यायें उपस्थित हो गई हैं, यथा–निर्धनता, बेरोजगारी, भिक्षावृत्ति, साम्प्रदायिकता, अलगाववाद, आंतकवाद, तस्करी, कालाबाजारी, राजनैतिक व्यमिचार, दे ा द्रोहिता, युवा असन्तोश, महिलाओं के विरूद्ध अपराध, भ्रारीरिक–मानसिक व्याधियाँ आदि। भारतीय समाज में मूल्यों की दयनीय स्थिति के कारण ही रूढ़ियों और संस्थाओं में संघर्श होने लगा है। विवाह–बन्धन टूट रहे हैं, संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है। लोगों की मनोवृत्तियों में काफी परिवर्तन आया है, जिसका सामाजिक ढाँचें पर अस्वस्थ प्रभाव पड़ा है।

वै वीकरण के दौर में हमारे मूल्य जो प्रायः समाप्त या नश्ट होते दिखायी दे रहे है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज का वह ीपन है जो महिलाओं बालिकाओं के संग दर्दनाक रूप से उनकी अस्मिता को नुकसान पहुँचाते है यहाँ मूल्यों का गिरना ही नजर आता है। मनोरंजन का पतन, धर्म का अप्रभावकारी होना, (सर्वधर्म) समभाव, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना निरन्तर विलुप्त हो रही है जिसके चलते समाज में नैतिक व्यवस्था का पतन हो रहा है। पारिवारिक तनाव, संघर्श और अन्य संरचनात्मक समस्याएं उत्पन्न हुई है। भारतीय संमाज की संस्कृति व सभ्यता इतनी व्यापक है कि उसका वर्णन करना सम्भव प्रतीत नहीं होता। आज हमारी संस्कृति अभूतपूर्व संकट से गुजर रही है। आज हर चीज का व्यावसायिक करण हो गया है। धर्म–गुरूओं, पुरोहितों उपदे ाकों की प्रधानता बढ़ी है जिनके लिए धर्म आजीविका का साधन बन गया है।

मूल्य संकट का प्रभाव सार्वजनिक जीवन में व्याप्त भ्रश्टाचार भी है। रि वत, पक्षपात्, अन्याय, कालाबाजारी, तस्करी, आतंकवाद, भाई–भतीजावाद आदि ऐसी बातें हैं, जिनके समक्ष नैतिक गुणों व मूल्यों का कोई महत्व नहीं हैं। दे ा के सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में भ्रश्टाचार की जड़ें मजबूत होती जा रही है।

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

भारतीय समाज में न्यायिक व्यवस्था नागरिकों के मन में दे ा के कानून और व्यवस्था के प्रति सम्मान उत्पन्न करने का कार्य करती है किन्तु भारत में भविश्य निधि घोटलें में उच्च और उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधी ाों के नाम सामने आ चुके है। इसी प्रकार ि ाक्षा के क्षेत्र में पतन देखने को मिल रहा है जो ि ाक्षा न केवल व्यैक्तिक, मानसिक और राश्ट्रीय प्रगति के लिये आव यक हैं, बल्कि सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए भी अनिवार्य है जो आज अवि वसनीय हो गया है। चिकित्सा क्षेत्र सबसे अधिक मानवीय है। चिकित्सक भापथ लेते हैं कि हम रोगियों के हित में कार्य करेगें। किन्तु भारत में पिछले दिनों ऐसी घटनाएँ घटित हुई हैं, जिनसे चिकित्सा व्यवसाय की साख पर बट्टा लगा है। एक डॉक्टर दम्पत्ति ने अपने 15 वर्शीय अव्यस्क पुत्र से एक रोगी का आपरे ान करवा डाला 'मेरठ में एक डॉक्टर ने HIV पॉजिटिव महिला का प्रसव कराने से मनाकर दिया।' चिकित्सा क्षेत्र को आज सर्वाधिक 'लाभ' देने वाला 'उद्योग' माना जाने लगा है।

मूल्यों का हमारे जीवन में कितना महत्व है इसका इतिहास गवाह है क्योंकि जिस समाज का मूल्य नहीं होता तो उसका अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। आज हमें आव यकता है कि हम अपने मूल्यों को फिर से जागृत करें। युवा पीढ़ी को जागरूक करने की आव यकता है यही समाज के कर्णधार है इन्हीं के द्वारा हमारा समाज सुरक्षित व स्वच्छ हो सकेगा। उदाहरण स्वरूप–हिन्दुओं में विवाह से सम्बन्धित एक दृढ़ मूल्य अन्तः विवाह (endogamy) हैं, अर्थात् इस सामाजिक मूल्य के अनुसार व्यक्ति को अपनी ही जाति या उपजाति में विवाह करना चाहिए। इसके विपरीत अगर कोई अन्तर्जातीय विवाह करता है तो सामान्यतः यह देखने को मिलता हैं कि उस विवाह की चर्चा उस दम्पति के परिवारों में, पड़ोस व गाँव में, मित्र–मण्डलियों में बड़े उत्साह से उद्वेगपूर्ण भाब्दों में की जाती है। उनके इस चर्चा से ऐसा लगता है कि उनका कुछ छिन गया हैं या उन्हीं पर कुछ ऑफत आ पड़ी है। उसी प्रकार विवाह के प चात् नवदम्पति अलग हो जाते है (संयुक्त परिवार से) तो वि ोशकर वधू की निन्दा होती है, क्योंकि हिन्दुओं का सामाजिक मूल्य आज भी संयुक्त–परिवार के पक्ष में ही है। इसके विपरीत कोई धर्म, त्याग, अहिंसा के सिद्धान्तों पर अटल रहकर अपना प्राण तक दे देता है तो उसकी प्र ांसा मुखरित हो उठते है क्योंकि उस व्यक्ति ने स्वीकृत मूल्यों को मान्यता दी है। मूल्य के इस उद्वेगात्मक पक्ष पर **श्री क्लूखौन (Kluckhon)** ने अत्यधिक बल दिया है।

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

स्वर्णिम भारत के पुनर्निर्माण में मूल्यों के संकट को दूर करने में परिवार, विद्यालय और समाज की भूमिका वि वसनीय रूप में इसकी प्रासंगिकता की झलक दिखायी पड़ती है। भारतीय समाज और संस्कृति प्राचीन काल से ही मूल्यों को मान्यता देती आई है। मूल्य मानव में सिद्धान्त के रूप में कार्य करते है। मनुश्य इन्हीं के लिए जीवन जीता है। किन्तु भारतीय समाज में मूल्यों का यह संकट निरंतर बढते रहने के बावजूद भी मानव अपने मूल्यों को आज भी बचाये हुये हैं और यही कारण है कि मानव जीवन में आज भी आज्ञा–पालन सत्य–पालन, कर्तव्य पालन, अहिंसा–पालन, सत्य की खोज, दे ा की स्वतन्त्रता , समाजहित की रक्षा, ई वर की खोज, मानवता की रक्षा, मानवतावाद की स्थापना आदि का महत्व है। असंख्य लोग आज भी इन्हीं मूल्यों की प्राप्ति हेतु जीते–मरते हैं।

व्यक्ति, समाज और मूल्यों के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों को द र्ाने के लिए प्रो0मुकर्जी(7) ने दीपक की बत्ती, तेल और ज्योति का उदाहरण दिया है। आप समाज को तेल, व्यक्ति को बाती एवं मूल्यों को ज्योति की संज्ञा देते हैं। तेल (समाज) के बिना बाती (व्यक्ति)

(7) वही पृ0–13

अधूरी है तथा ज्योति (मूल्यों) के बिना बाती और तेल (व्यक्ति व समाज) निरर्थक हैं। मूल्य ही व्यक्ति और समाज के जीवन में ज्योति जलाता है। ये कहते हैं– ''मनुश्य और समाज–तैरती हुई बाती और तेल के बीच चलने वाले अनन्त आदान–प्रदान से मूल्य अनुभव की उजली, स्थिर ज्योति पनपती हैं जो कि हमारे नीरस और निरानन्द वि व को निरन्तर प्रकाि ात करते रहते है।

इस प्रकार मूल्यों का महत्व मानव जीवन के साथ–साथ समाज की प्रगति में सफलता की द्योतक हैं। सर्वप्रमुख भूमिका परिवार की हैं, क्योकिं परिवार ही मानव की प्रथम पाठ ाला होती है। घर–परिवार का 'अपनत्व' बालक को ि ाश्टाचार, सदाचार और व्यवहार के सही तरीके भी सिखाता है। बाल्यावस्था में सीखा जाने वाला ि ाश्ट व्यवहार, सदाचरण, सत्यवादन, ईमानदारी, कर्मठता आदि कालान्तर में अच्छे मूल्यों को विकासित करती है। स्वस्थ परिवे ा बालको में मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने में सक्षम है।

जिस प्रकार परिवार प्रथम पाठ ाला है तो बालक की दूसरी पाठ ाला विद्यालय होता है। विद्यालय के स्वास्थ वातावरण,ि ाक्षकों का व्यक्तित्व और व्यवहार, विद्यालय में भौतिक

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

सुविधायें छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में वि ोश भूमिका निभाते हैं। ि ाक्षक की भूमिका उनका आचरण महत्वपूर्ण होता है क्योंकि ि ाक्षक के आचरण का अनुकरण करके छात्र सत्य और न्याय जैसे जीवन–मूल्यों को सीखते हैं, जो भाब्दों या पुस्तकों के माध्यम से नहीं सिखाये जा सकते हैं।

स्वर्णिम भारत को 'सोने की चिड़िया' पुनः कहे जाने के लिए भारतीय समाजिक मूल्यों को जीवन्त रूप देने के लिए समाज की भूमिका अत्यन्त उल्लेखनीय है। समाज को सामाजिक सम्बन्धों का जाल कहा जाता है। समाज के सदस्यों के बीच पाये जाने वाले इन सम्बन्धों का प्रभाव मानव मूल्यों पर भी पड़ता है। यदि लोगों में परस्पर अच्छे सामाजिक सम्बन्ध होगें, तो उनमें प्रेम, सहयोग, भ्रातृत्व, त्याग,एकता, करूण, सद्भावना जैसे मूल्यों का विकास होगा। समाज अपने मूल्यों, आद ार्शों और क्रियाओं को आने वाली सन्तति को हस्तान्तरित करता हुआ स्वयं को जीवित रखता है। प्रौढ़जनों में हमारे ि ाक्षक, अभिभावक, राजनेता, प्र ाासक, समाज एवं राश्ट्र के कर्णधार सभी सम्मिलित हैं। इन सब लोगों को समाज की नवीन सन्तति के सम्मुख मूल्यों एवं आद ार्शों की उपयुक्त प्रस्तुत करनी चाहिए ताकि नवीन सन्तति/पीढ़ी अपने जीवन पथ को वाँछित मूल्यों के आधार पर परिश्कृत कर सके।

सामाजिक मूल्य सामाजिक एकरूपता को उत्पन्न करते है। इसका कारण यह है कि मूल्य कुछ नि ि चत व मान्य व्यवहार–प्रतिमान या मान की प्रस्तुत करता है और समाज के सदस्यों से यह आ ाा की जाती है कि वे अपने व्यवहारों या आचरणों को उस मान से नीचे गिरने नहीं देगे या उन व्यवहार–प्रतिमानों को बनाए रखने का प्रयत्न करेंगे। इसके फलस्वरूप सामाजिक जीवन में एकरूपता उत्पन्न होती है जो कि स्वस्थ समाज–व्यवस्था व संगठन के लिए आव यक होती है।

कुछ भी हो, सामाजिक विघटन को रोकने तथा सामाजिक व्यवस्था व पुनर्निर्माण में सामाजिक मूल्य का अपना महत्व है। **सामाजिक मूल्य सामाजिक जीवन का मान है। प्रो0 मुकर्जी** कहते हैं कि समाज के एक सामान्य सिद्धान्त का प्रतिपादन मूल्यों के सन्दर्भ में ही सम्भव है क्योकि समाज मूल्यों का ही संगठन और संकलन है।[8] (Society is an organization and accumulation of values)

(8) मुकर्जी रविन्द्रनाथ एव अग्रवाल, भरत, समाज ाास्त्र, 2013, पृ0–163–172

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

सन्दर्भ–सूची

1. डॉ0 मुकर्जी, राधाकमल– सो ाल स्ट्रॅक्चर ऑफ वैल्यूज, उद्धृत , भारतीय समाज के पथप्रद ाक–एम0 एल0 गुप्ता एवं डी0डी0 भार्मा पृ09, 2013
2. वही।
3. डॉ0 आर0के0 मुकर्जी इन बी0 सिंह के फ्रन्टियर्स ऑफ सो ाल साइंसेंज, पृ0–23 उद्धृत वही पृ0–7
4. एच0एम0 जॉनसन, समाज ाास्त्र– ए सिस्टमेटिक इन्ट्रोडक ान एलाइड पब्लिके ान लि0, बाम्बे 1966, पृ0–49 उद्धृत मुकर्जी एवं अग्रवाल, समाज ाास्त्र, पृ0–164, 2013।
5. वही पृ0–9
6. वही पृ0–11
7. वही पृ0–13
8. मुकर्जी रविन्द्रनाथ एव अग्रवाल, भरत, समाज ाास्त्र, 2013, पृ0–163–172
9. वर्मा, ओ0पी0–समाज ाास्त्र, पृ0 239–245
10. पाण्डेय, वी0के0 – वै वीकरण के विविध आयाम, 2008